P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6 * ISSUE-5 * (Part-1) January- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# रामप्रकाश गोयल के दृष्टिकोण से गद्य साहित्य का विश्लेषण

**नीलम**
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
एम0जे0डी0 महाविद्यालय,
सहारनपुर, भारत

**सारांश**

प्रो0 राम प्रकाश वहु आयामी काव्य एवं गद्य के सम्पन्न साहित्यकार थे। निस्सेन्दह आलोच्य रचनाकार प्रो0 राम प्रकाश गोयल ने हिन्दी गद्य–पद्य साहित्य की विधि विधाओं को सजाने एवं सवारने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी 82 वर्ष का अनुभव एवं चिन्तन उनके पास था। वास्तव में वे एक आसाधरण साहित्य सृजक से उनके गद्य साहित्य का विश्लेषण प्रस्तुत है।

**मुख्य शब्द** : प्रो0 राम प्रकाश गोयल, साहित्यकार, उपन्यासकार।

**प्रस्तावना**

प्रो0 राम प्रकाश गोयल जी की ख्याति एक बहुआयामी काव्य–प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार के रूप में है। 30 जून सन् 1925 को बरेली में जन्में प्रो0 रामप्रकाश गोयल ने प्रचुर साहित्य का सृजन किया है। उनका सृजन गद्य और पद्य की विविध विधाओं में है। उपन्यास– 'टूटते सत्य' का कथ्य और शिल्प का विश्लेषण– उपन्यास 'टूटते सत्य' त्रिकोणात्मक प्रेम पर आधारित स्त्री–पुरूष सम्बन्धों का मनोवैज्ञानिक चित्रण प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु तीन पुरूष पात्रों असित, अनिल और रवि तथा तीन नारी पात्रों,निशि, प्रभा और साधना के बीच गुजरती है। निशि किशोरावस्था में ही विधवा हो जाती है। वह संयमी है, परन्तु फिर यकायक नवयुवक असित से प्रभावित होकर उसके प्यार में डूब जाती है और अन्ततः दोनों का प्यार परिणय सूत्र बन्धन में बँध जाता है।

दूसरी ओर प्रभा है जो भरपूर यौवन और आकर्षण के होते हुए भी चरित्रहीन पति द्वारा ठुकरायी जाती है। ऐसी पति द्वारा शोषित, पत्यिकता नारी प्रोफेसर अनिल की ओर झुकती है और अनिल का प्रेम पाकर अपना सारा विवेक खो बैठती है। लेकिन जब उसका विवेक जागता है तो वह अनिल के जीवन से दूर चली जाती है।

उपन्यास की कहानी में प्रो0 अनिल विवाहित है ओर उसकी पत्नी साधना अपने पुराने प्रेमी रवि को पाने के लिए छटपटाती है। अन्त में, जब यह पता चलता है तो दोनों घर बर्बाद हो जाते हैं और कोई किसी को प्राप्त नहीं कर पाता। वास्तव में भारतीय समाज में इतनी वासनात्मक मानसिक विकृति अनपेक्षित है। इस दृष्टि से उपन्यास का 'अन्त' सन्तोषजनक कहा जा सकता है।

एक आलोचक के शब्दों में– ''त्रिकोण प्रेम पर इतना सशक्त तथा सजीव उपन्यास कदाचित आज तक नहीं छपा है। एक वकील होते हुए भी रामप्रकाश गोयल ऐसा उपन्यास लिख पाए यह उनकी सूक्ष्म दृष्टि, गहन अध्ययन तथा साहित्यिक प्रतिभा का द्योतक है।

इसी प्रकार 'टूटते सत्य' नामक उपन्यास पर हिन्दी की समीक्षक आचार्या सारंगादेश 'असीम' के ये आलोचनात्मक विचार भी दृष्टव्य हैं–

''प्रस्तुत उपन्यास में मनोविज्ञान, कल्पना और रोमांस तथा बुद्धिनिष्ठता सर्वत्र लक्षित होती है। त्रिकोण प्रेम पर आधारित इस उपन्यास का प्रत्येक पात्र पाठक के हृदय को गहराई से छू लेने की सामर्थ्य रखता है, सर्वथा नवीन और मनोवैज्ञानिक शैली पर आधारित इस उपन्यास में मानव–मन के भावों का तथा मानव जीवन के उतार चढ़ाव का हर पहलू से जीवन्त चित्रण किया गया है। नारी मन के हर पहलू को उपन्यासकार ने बड़ी गहराई से समझा है। इस उपन्यास की जीवन्ता को भुक्तभोगी मानव–मन बड़ी जल्दी पहचान सकता है।

वास्तव में, जीवन से हटकर किया हुआ प्रेम प्रायः विनाशकारी सिद्ध हो सकता है। इसके कारण जीवन कितना कटु तथा विशाक्त हो सकता है। इस तथ्य को लेखक ने अत्यन्त हृदयस्पर्शी, मार्मिक एवं मनोवैज्ञानिक ढंग से चित्रित किया है। घटनाएँ इतने स्वाभाविक ढंग से सम्मुख आती हैं कि वे जीवन की वास्तविकताएँ ही लगने लगती हैं। इस उपन्यास में उपन्यासकार ने अनेकशः

तर्कों के माध्यम से इस तथ्य पर बल दिया है कि प्रेम एक सस्ती और बाजारू चीज नहीं है। यह पवित्र एवं उदात्त भावना है, भले ही फिर उसमें सेक्स ही क्यों न आ जाए। सेक्स सम्बन्धों का अत्यन्तसूक्ष्म विवेचन होते हुए भी उपन्यास की भाषा में कहीं भी अश्लीलता और हल्कापन नहीं है।

**अध्ययन का उद्देश्य**

प्रस्तुत शोध पत्र में प्रो0 रामप्रकाश गोयल ने सशक्त उपन्यास हमारे समक्ष प्रस्तुत किये हैं जो पाठक के मन को छू जाते हैं और अपनी ओर आकर्षित करते हें प्रो0 रामप्रकाश गोयल क्षरा रचित उपन्यासों में मनोविज्ञान, कल्पना और रोमांस तथा बुद्धिनिष्ठता सर्वत्र लक्षित होती है। जो पाठक के हृदय को गहराई से छू लेने की सामर्थ्य रखती हे। हम कह सकते हैं। कि गद्य साहित्य के सृजन में प्रो0 रामप्रकाश गोयल का उल्लेखनीय योगदान है। वह एक सफल गद्यकार थे।

**नाटकः कथ्य और शिल्प**

आलोच्य रचनाकार प्रो0 रामप्रकाश गोयल का नाटक विधा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान है। यद्यपि उन्होंने संख्या की दृष्टि से अधिक नाटक नहीं लिखें हैं। तथा उनम नाटकीयता की सफल अभिव्यक्ति हुई है। इस दृष्टि से उनका केवल एक ही नाटक सृजित है– 'दिल और दिमाग' है कि प्रो0 रामप्रकाश गोयल ने अनेक नाटकों में सफलतापूर्वक अभिनय भी किया है। प्रस्तुत है उनके 'दिल और दिमाग' नामक नाटक का कथ्य और शिल्प के आधार पर एक विश्लेषण प्रो0 रामप्रकाश गोयल द्वारा रचित नाटक 'दिल और दिमाग' में नाटककार ने दिल और दिमाग के पृथक–पृथक महत्व को प्रतिपादित किया है। इसमें 'दिमाग' का पुत्र 'विचार' है और –दिल' की पुत्री 'प्यार' है। सभी के संवाद परस्पर सुगुंफित हैं। सम्पूर्ण नाटक एक ही अंक में रचित है। नाटक के आरम्भ में 'दिमाग और 'विचार' के परस्पर वार्तालाप प्रस्तुत करते हुए 'दिमाग' का महत्व अंकित किया गया है।

वस्तुतः नाटककार प्रो0 रामप्रकाश गोयल ने 'दिल और दिमाग' के माध्यम से दोनों ही की महत्ता प्रतिपादित की है। नाटक के 'उद्देश्य' को नाटककार ने इस प्रकार इंगित किया है। 'दिल और दिमाग' तथा 'विचार' और 'प्यार' चार पात्रों के माध्यम से नाटककार ने एक उपयोगी और सार्थक सन्देश युग की मानवता को दिया है। उनके चरित्र चित्रण में भी नाटककार ने सादगी को ध्यान में रखा है। युगीन परिवेश को नाटककार ने इस नाटक में अभिव्यक्ति दी है। जहाँ तक भाषा– शैली का प्रश्न है, खड़ी बोली को साहित्यकार ने प्रमुखता दी है। संक्षेप में 'दिल और दिमाग' नाटक कथ्य और शिल्प की दृष्टि से एक सफल नाटक है।

'खाली समय का सही उपयोग' उनकी भावात्मक एवं व्यग्यांत्मक शैली प्रधान वार्ता है। इसम वार्ताकार प्रो0 रामप्रकाश गोयल ने 'खाली समय के सही–सही उपयोग' के लिए पाठका एवं श्रोताओं को उद्धरणों सहित अपने अनुभवों को प्रस्तुत किया है। वार्ताकार ने खाली समय का कैसे उपयोग करें, इसके लिए अनेक सटीक उपाय बताये हैं।

मैदान में खेल खेलना भी समय का उपयोग है। क्रिकेट, हॉकी, फुटबाल आदि कुछ शौक हैं। जिनको खेल देखने का शौक है, उन्हें खेल देखकर आनंद मिलता है।

इस प्रकार इस सम्पूर्ण वार्ता में खाली समय के सदुपयोग के उपाय सुझाए गए हैं। सारतः सम्पूर्ण वार्ता उपयोगी और भाषा शैलीगत प्रस्तुति सुन्दर बन पड़ी है। आकाशवाणी के बरेली केन्द्र से प्रसारित एक अन्य वार्ता 'उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम' है। यह वार्ता विवेचनात्मक शैली में है। अधिनियम पहले से बना है जिसकी सरल विवेचना एवं व्याख्या एक वकील के रूप में प्रो0 रामप्रकाश गोयल कर रहे हैं। 'उपभोक्ता' कौन है?

निस्सन्देह, यह वार्ता भी जनहित में अति उपयोगी है। इसमें भी विषय की प्रस्तुति अत्यन्त सरल एवं प्रभावी रूप में हुई है। भाषा शैली विषयानुकूल है। सम्पूर्ण विषय सीधे ही श्रोताओं को समझ में आ जाता है। वकील होने के कारण प्रो0 रामप्रकाश गोयल श्रोताओं की सही नब्ज जानते हैं।

आकाशवाणी के बरेली केन्द्र से प्रसारित प्रो0 रामप्रकाश गोयल की एक अन्य वार्ता है– 'कानून और न्याय व्यवस्था'। यह ज्ञान की दृष्टि से जनहित में भी अत्यन्त उपयोगी है।

सारतः उपर्युक्त विवेचन एवं विश्लेषण के आधार पर यह कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगा कि प्रो0 रामप्रकाश गोयल द्वारा प्रस्तुत उनकी आकाशवाणी वार्ताएँ जनहित में अत्यन्त उपयोगी हैं। उनके विषय आम आदमी से जुड़े हैं और प्रस्तुति अत्यन्त सरल एवं प्रभावमयी है। आम आदमी की भाषा शैली में ही प्रो0 रामप्रकाश गोयल ने अपनी वार्ताएँ आकाशवाणी एवं दूरदर्शन केन्द्रो पर प्रस्तुत की हैं। ये आम आदमी से सीधे जुड़ती हैं। सरलता, सरसता, स्वाभाविकता, प्रभावोत्पादकता, भावनात्मकता आदि इनकी भाषा शैली की विशेषताएँ हैं। निस्सन्देह, आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के विविध केन्द्रो से प्रसारित प्रो0 रामप्रकाश गोयल की वार्ताएँ जन–जन अर्थात् आम आदमी को उनके हित में सन्देश देती हैं।

डॉ0 एन0एल0 शर्मा लिखते हैं– ''इन पत्रों के माध्यम से गोयल साहब के ढाई आखर के पाठ की सम्पूर्णता सिद्ध होती है। वह प्रेम पंथ के पहुँचे हुए यात्री हैं और उनकी पहुँच प्रेम की भावनाओं के गुह्य से गुह्यतर कक्ष और पक्ष तक विस्तृत है। वह खुलकर प्यार करते हैं, सबसे प्यार करते हैं, सबको प्यार बाँटते हैं और सबको प्यार करते हैं।

**निश्कर्श**

सारतः अनेक विद्धान आलोचकों एवं पाठकों ने 'सच्चे प्रेम पत्र' में समाहित 'प्रेम–पत्रों' की सहज भाव से प्रशंसा की है। इन पत्रों की भाषा शैली बहुआयामी है।प्रो0 रामप्रकाश गोयल द्वारा रचित 'सच्चे प्रेम–पत्र' हिन्दी पत्र साहित्य की एक अनूठी काव्य कृति है जो अनूठे विषय 'प्रेमतत्व' को अत्यन्त ही सरस, सरल एवं प्रभाविष्णुता के साथ अभिव्यक्त करती है।

उपर्युक्त समग्र विवेचन एवं विश्लेषण से स्पष्ट है कि गद्य–साहित्य के सृजन में भी प्रो0 रामप्रकाश गोयल का उल्लेखनीय योगदान है। वस्तुतः उन्होंने एक सफल गद्यकार की भी भूमिका निभायी है। हिन्दी गद्य–साहित्य

की विविध विधाओं में उन्होंने सृजन किया है। 'टूटते सत्य' शीर्षक से उन्होंने जहाँ एक महत्वपूर्ण उपन्यास हिन्दी साहित्य को दिया है, वहीं एक नाटकार के रूप में 'दिल और दिमाग' शीर्षक से एक सफल एवं महत्वपूर्ण नाटक की भी उन्होंने रचना की है। उन्होंने लगभग 50 आकाशवाणी वार्ताएँ दी हैं। जिन्में कुछ अप्राप्य हैं। 'सच्चे प्रेम पत्र' उनकी एक अन्य उल्लेखनीय सम्पादित गद्य काव्यकृति है। इस प्रकार प्रो0 रामप्रकाश गोयल एक सफल उपन्यासकार, नाटककार, वार्ताकार, पत्र–लेखक आदि के रूप में भी गद्य साहित्य के क्षत्र में उल्लेखनीय है। उन्होंने विषयानुरूप भावात्मक, व्याख्यात्मक, विचारात्मक, विचनात्मक, विवेचनात्मक आदि शैलियों में गद्य की विविध विधाओं में अपने अनुभवजन्य विचारों की अभिव्यक्ति सरस, सरल, साहित्यिक हिन्दी में की है, जिसमें आम आदमी से सीधे जुड़ाव करने की अपूर्व शक्ति है। उनकी भाषा–शैली में सरसता, सरलता, मौलिकता, प्रभावोत्पादकता, चित्रात्मकता, संप्रेषणीयता आदि की अक्षुण विशेषताएँ निहित हैं। वस्तुतः विषय–वस्तु, कथ्य और शिल्प आदि की दृष्टि से उनका गद्य साहित्य उदात्त है, प्रभावोत्पादक है और स्तरीय है। यह हिन्दी साहित्य की अमूल्य धरोहर है।

**सन्दर्भ ग्रंथ सूची**

*प्रो0 राम प्रकाश गोयल 1972: ''टूटते सत्य'', पृ0–107*
*पो0 राम प्रकाश गोयल 1972: ''टूटते सत्य'', पृ0–पृ0 151–152*
*डा0 महेश दिवाकर : प्रो0 राम प्रकाश 'दिल और दिमाग', पृ0–89 से 97*
*डा0 महेश दिवाकर : प्रो0 राम प्रकाश 'दिल और दिमाग', पृष्ट 24*
*प्रो0 रामप्रकाश गोयल : 'सच्चे प्रेम पत्र', पृ0 23*
*प्रो0 रामप्रकाश गोयल : 'सच्चे प्रेम पत्र', पृ0 32*
*प्रो0 रामप्रकाश गोयल : 'सच्चे प्रेम पत्र', पृ0–35*
*आलोक, भोर का तार, 1964*